MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

Jan. To March 2023
Issue 45, Vol-03

Date of Publication
01 Jan. 2023

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
01 January 2023

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 8.14 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. CERTIFIED QUALITY MANAGEMENT SYSTEM ISO 9001:2015 International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

37) संतन को कहाँ सीकरी सो काज
डॉ. सुनीता त्रिपाठी, गोरखपुर ||166

38) प्रगतिवादी युग में स्वाधीनता भावना की अभिव्यक्ति
तरन्नुम खान ||170

39) अपचारी किशोरों एवं किशोरियों की आर्थिक स्थिति का
डॉ० मंजू गुप्ता, कानपुर ||172

40) भारतीय लोक साहित्य, भाग—१
डॉ० रमेशकुमार टण्डन, खरसिया, छ.ग. ||175

41) 'दौड़' उपन्यास में नवयुग बोध
संजय कुमार यादव ||180

42) समकालीन हिन्दी कविता—नवगीत एवं आधुनिकता बोध
कंचन शर्मा गोरखपुर, उ०प्र०। ||183

43) हाथी भाटा: संकल्प से सृजित स्वर्ग सी हरीतिमा में —
अभिषेक श्रीवास्तव—डॉ. लोकेश कुमार त्रिपाठी ||187



www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

(७३.३३ प्रतिशत) को पर्याप्त थी। इसी प्रकार अपचारी किशोरों (२० प्रतिशत) की तुलना में अधिकांश अपचारी किशोरियों (६६.६६ प्रतिशत) की इच्छाओं की पूर्ति सामान्य रूप से नहीं हो पाती थी।

शैक्षिक निहितार्थः— संप्रेक्षण गृहों का मुख्य उद्देश्य अपचारी किशोर/किशोरियों को गलत कार्यों के लिए प्रायश्चित करने तथा स्वयं में सुधार लाने का अवसर प्रदान कर उनको आत्मनिर्भर व जिम्मेदार व्यक्ति बनाना है ताकि वे भविष्य में परिवार व समाज के जिम्मेदार सदस्य के रूप में अपने कर्त्तव्यों का निवर्हन कर सकें।

सुझावः— १. संप्रेक्षण गृहों एवं महिला शरणालयों में अपचारी किशोर एवं किशोरियों के लिए निरौपचारिक तथा कम्प्यूटर शिक्षा के साथ—साथ विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यों तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण सम्बन्धी सुविधाओं की व्यवस्था की जा सकती है।

२. योग, ध्यान, शारीरिक शिक्षा व खेलकूद आदि से सम्बन्धित कार्यक्रम अपचारी किशोर एवं किशोरियों के लिए आयोजित किये जा सकते हैं ताकि इनको शारीरिक—मानसिक रूप से स्वस्थ व इनकी इच्छा शक्ति को सबल बनाया जा सके जिससे कि ये भविष्य में गलत कार्यों की ओर उन्मुख न हो सकें।

सन्दर्भ सूचीः—

1. Burt, Cyril (1948):The Young Delinquent, D Appleton & Co. New York.
2. Hall, G. Stanley (1904):Adolescence
Parmar, T.C. (2008):Delinquency Among Children, Arise Publishers & Distributors, New Delhi
4. Trevor Bennett & Holloway (2015):Drugs and Crime, Open University Press.
५. उपाध्याय, जीतेन्द्र कुमार (२०१७):बालकों के विरूद्ध अपराध एवं किशोर न्याय, सेण्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।
६. बघेल, डी०सी० (२०१०):अपराध शास्त्र, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
७. सिंह, बृंदा (२०१०):बाल अपराध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
Website -ncrb.gov.inhi.m.wikipedia.org

⌘⌘⌘

40

भारतीय लोक साहित्य, भाग—१

(कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, काँगड़ी, चम्बियाली, कुलुई, मैथिली, मगही, भोजपुरी)

डॉ० रमेशकुमार टण्डन,
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शास० महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
खरसिया, छ.ग.

****

भारत को समग्ररूपेण समझना हो, तो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवासरत लोगों के जन जीवन, उनकी जीवन—षैली एवं उनके मध्य प्रचलित संस्कृति को बेहद करीब से अवलोकन करना आवष्यक होता है। परन्तु भौगोलिक क्षेत्र इतना विस्तश्त और दुर्गम है कि सुगमता से सभी स्थानों तक पहुँच पाना सम्भव नहीं हो सकता। अतः विद्वानों द्वारा समय—समय पर लोक साहित्य के रूप में लिखित ग्रन्थों के अध्ययन से सम्पूर्ण भारत के जन जीवन को समझा जा सकता है। यहाँ कष्मीरी लोक साहित्य, डोगरी लोक साहित्य, पंजाबी लोक साहित्य, काँगड़ी लोक साहित्य, चम्बियाली लोक साहित्य, कुलुई लोक साहित्य, मैथिली लोक साहित्य, मगही लोक साहित्य तथा भोजपुरी लोक साहित्य का संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कष्मीरी लोक साहित्य :— सन् १९४७ ई. से पहले काष्मीर के दो भाग थे— गिलगिट और दर्दिस्तान। सबसे पहले जी. डब्ल्यू. लैटनेर ने दर्दिस्तान की लोकोक्तियों एवं जन्तु कथाओं का संकलन सन् १८७२ ई. में किया था। गिलगिट क्षेत्र से एकत्रित सामग्रियों के द्वारा इन्होंने दर्दू लोक कथाओं का पाँच भागों में वर्गीकरण किया है। दूसरे विद्वान के रूप में श्रीमती एफ. ए. स्टील ने काष्मीर की नौ

लोक कथाओं को प्रकाषित किया। इसने 'वाइड अवेक स्टोरीज' नामक ग्रन्थ और 'पंजाब नोट्स एण्ड क्वेरीज' नामक पत्रिका में लोक कथाओं एवं लोक विष्वास, रीति रिवाज आदि का उल्लेख किया है। पादरी रेवेरेण्ड जे. एच. नोवेल्स ने कुछ लोक कथाओं को 'इण्डियन एन्टीक्वेरी' नामक षोध ा पत्रिका में प्रकाषित कराया। श्री सोमनाथ दर ने भी काष्मीरी लोक कथाओं का संकलन किया। श्री मोहन कृश्ण दर ने 'काष्मीरी लोक साहित्य' के नाम से एक स्वतंत्र किताब लिखकर इसमें काष्मीरी लोक गीत, लोक कथा, गाथा, नाटक, लोकोक्तियो आदि का समावेष किया है।

डोगरी लोक साहित्य :—

डोगरी भाशा का क्षेत्र जम्मू प्रदेष, पूर्वी पंजाब का कांगड़ा प्रान्त तथा हिमाचल प्रदेष का चम्बा खण्ड है। इसकी लिपि 'टाकरी' या 'टक्करी' है। डोगरी में बाबा जित्तो का कारक, दाता एण्ड राज बधू रूल्ल, षेरे डुग्गर वीर डीडो और गुग्गा आदि अनेक वीर गाथाएँ प्रसिद्ध हैं। जम्मू की 'डोगरी संस्था' के संस्थापक पं० रामनाथ षास्त्री ने डोगरी भाशा में अनेक ग्रन्थ लिखें हैं। श्री दीनू भाई पन्त ने डोगरी में अनेक कविताएँ लिखीं हैं। डॉ० षिव 'निर्मोही' ने 'डुग्गर का लोक साहित्य', 'डुग्गर की संस्कृति', 'डुग्गर की लोक गाथाएँ', 'डुग्गर के देव स्थान', 'डुग्गर की लोक कथाएँ', 'डुग्गर के लोक देवता', 'डोगरा गाँव—पैंथल' लिखकरी डोगरी लोक साहित्य को समृद्ध किया है। केहरि सिंह मध ुकर ने आठ भागों में डोगरी लोक कथाओं का संग्रह 'डोगरी लोक कथा' प्रकाषित किया है। डॉ० चम्पा षर्मा ने 'डुग्गर दा लोक जीवन' में डोगरी लोक जीवन और लोक संस्कृति का उल्लेख किया है। डॉ० ओम प्रकाष गुप्त एवं इन्दु भूशण ने 'डोगरी लोक गीत' नामक संग्रह लिखा। डॉ० अषोक जेरथ ने 'फोक आर्ट ऑफ डुग्गर' में इस क्षेत्र की लोक कला का विवरण प्रस्तुत किया है।

पंजाबी लोक साहित्य :— पंजाबी लोक गीतों का सर्वप्रथम प्रकाषन सन् १८८५ ई. में हुआ था जब थामस एच. थार्नटन ने इस संबंध में अपना एक लेख लिखा था। सन् १८८२ ई. में सर रिचर्ड टेम्पूल ने अपने एक लेख में पंजाब के कुछ लोक गीतों का संग्रह किया था। इस ७५ पश्ठों के लेख में टेम्पूल ने वर्श के बारह महीनों में गाये जाने वाले हाषिम के गीतों का संकलन किया है। टेम्पूल ने पत्रिका 'पंजाब नोट्स एण्ड क्वेरीज' में पंजाब के लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति पर प्रचुर मात्रा में लेख लिखें हैं। लोक कथा के अन्तर्गत इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दि लीजेण्ड्स आफ दि पंजाब' तीन वश्हत् भागों में प्रकाषित है। इनमें संग्रहित कथाएँ अर्द्ध ऐतिहासिक हैं। श्रीमती एच. ए. रोज ने पंजाबी लोक गीतों का प्रकाषन 'इण्डियन एन्टीक्वेरी' नामक पत्रिका में किया है। इसने सिक्ख युद्ध संबंध ी विषाल लोक गाथा तथा गद्दी जाति की स्त्रियों के गीत एवं एक पहाड़ी प्रेम संबंधी गीत भी प्रकाषित किया है। कोल्ड स्ट्रीम ने सन् १८८७ ई. में पठानकोट तथा डलहौजी नगरों में पालकी ढोने वाले श्रमिकों से ग्यारह गीत संकलित किए हैं। श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने एम. एस. रन्धावा के साथ पंजाबी लोक गीतों का संकलन प्रकाषित किया है। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'गिद्धा' नामक किताब में पंजाबी स्त्रियों के इस नश्त्य का व्यापक वर्णन किया है। श्री नरेन्द्र ध ीर ने 'मैं धरती पंजाब की' पुस्तक लिखकर इसमें पंजाबी लोक साहित्य और जन—जीवन का सुन्दर चित्रण किया है। हरभजन सिंह ने 'पंजाबण दे गीत' (१९४८) में, अवतार सिंह दिलेर ने 'पंजाबी लोक गीत' (१९५४) में तथा संतोश सिंह धीर ने 'लोक गीताँ वारे' (१९५४) में पंजाबी लोक गीतों को लिपिबद्ध किया है। पंजाबी लोक कथाओं में श्रीमती एफ. ए. स्टील की पुस्तक 'वाइड अवेक स्टोरीज' प्रसिद्ध है, जिसमें पंजाब की कथाएँ संग्रहित हैं। इन्होंने पत्रिका 'पंजाब नोट्स एण्ड क्वेरीज' में लोक संस्कृति से संबंधित कई लेख लिखे— 'ओमन्स' में षकुन और अपषकुन पर विचार है, 'स्नेक वरषिप इन दि पंजाब' में सर्प पूजा के विशय पर लिखा गया, 'माडर्न गावलिन्स' में भूत—दूतों एवं राक्षस—पिसाचों पर चर्चा है। चार्ल्स स्विनर्टन ने 'दि एडवेन्चर्स आफ दि पंजाब हीरो राजा रसालू एण्ड

अदर फोकटेल्स आफ दि पंजाब', 'रोमेन्टिक टेल्स फ्राम दि पंजाब', इण्डियन नाइट्स इण्टरटेनमेण्ट' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया है। जे. एफ. ए. मैकनेयर तथा टामस लैम्बर्ट बाट लो ने सम्मिलित रूप से लोक कथाओं से संबंधित पुस्तक लिखे — 'दि ओरल ट्रेडिषन्स फ्राम दि इण्ड्स'।

काँगड़ी लोक साहित्य :— हिमालय की श्रेणियों और षिवालिक पहाड़ियों से चारों ओर से घिरे होने के कारण काँगड़ा प्रदेष की जन भाशा प्रारम्भ से ही काँगड़ी रही है। सर रिचर्ड टेम्पुल ने 'काँगरा ए लव सांग' और 'काँगरा—ए मैरेज सांग' लेख लिखकर क्रमषः प्रेम और विवाह संबंधी गीतों पर प्रकाष डाला है। अन्य विद्वान डॉ० एम. एस. रन्धावा हुए, जिन्होंने 'काँगड़ा के लोक—गीत' ग्रन्थ की रचना की। श्री दुनीचन्द्र षर्मा ने 'देवर भाभी इन काँगरा फोक सांग्स' तथा श्री षमी षर्मा ने 'काँगड़ी लोक साहित्य' लिखा।

चम्बियाली लोक साहित्य :— भारतीय संघ में विलय होने के पहले चम्बा, पंजाब की एक पहाड़ी रियासत थी। ईसाई धर्म के प्रचारक डॉ० हचिन्सन ने 'टाकरी' लिपि में 'मंगल समाचार' नाम से चम्बियाली लोक साहित्य से संबंधित अनेक पुस्तक प्रकाषित करवाई। श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने चम्बियाली लोक साहित्य के अनेक गीतों का संकलन अपनी पुस्तकों 'बेला फूले आधी रात' और 'धरती गाती है' में किया है। श्री दौलतराम गुप्त ने इलाहाबाद से प्रकाषित 'कर्मयोगी' में 'हिमतरंग' के नाम से चम्बियाली लोक गीतों को प्रकाषित किया है। श्री हरिप्रसाद सुमन ने पत्रिका 'आजकल', 'वीर अर्जुन', 'सहयोग', 'मिलाप' आदि में लोक गीतों पर अनेक लेख लिखें हैं। इन्होंने 'चम्बा गाता है' नाम से चम्बियाली लोक गीतों का एक संग्रह भी छपवाया है। 'हिमप्रस्थ' में श्री मैथिली प्रसाद भारद्वाज का एक लेख 'गल्लाँ होई बीतियाँ' भी छपा है।

कुलुई लोक साहित्य :— कुल्लुई भाशा का क्षेत्र कुल्लू से लेकर हिमाचल प्रदेष के महासू जिले तक फैला हुआ है। श्री पद्मचन्द्र कष्यप ने 'हिन्दी साहित्य के वृहद् इतिहास' में कुलुई लोक साहित्य पर एक निबंध लिखे। अनेक लेख इस पर विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में लिखे तो गए, परन्तु कोई संकलन प्रकाषित नहीं हो पाया है।

मैथिली लोक साहित्य :— डॉ० ग्रियर्सन ने मैथिली, मगही और भोजपुरी नामक वर्गों में बिहारी भाशा को विभाजित किया है। आधुनिक मिथिला क्षेत्र में प्राचीन काल के वैषाली, विदेह और अंग प्रान्त आते हैं। मैथिली भाशा दरभंगा, मुजफ्फरनगर, मुंगेर, भागलपुर, सहरसा, षाहपुर और पूर्णियाँ जिले में बोली जाती है। दरभंगा नगर मैथिली का सांस्कृतिक केन्द्र है। श्री राम एकबाल सिंह 'राकेष' ने 'मैथिली लोक गीत' में सोहर, नचारी, समदाउने, तिरहुति, वटगमनी, चैतावर, मध ुश्रावणी आदि लोक गीतों को संग्रहीत किया है। डॉ० तेज नारायण लाल ने मैथिली लोक गीतों का विस्तृत विवेचन करते हुए षोध कार्य किया है। श्री कालिकुमार दास, श्री बलदेव प्रसाद 'कवि किंकर', जीवानंद ठाकुर तथा बदरी नाथ झा ने भी लोक गीतों के संग्रह का कार्य किया है। डॉ० जयकान्त मिश्र ने 'इन्ट्रोडक्षन टु दि फोक लिटरेचर आफ मिथिला' नामक अपने ग्रन्थ में मैथिली लोक साहित्य का विवेचन प्रस्तुत किया है। श्री नन्दीपति दास ने 'नैना भुटका' नामक संग्रह में कुछ लोक कथाएँ संग्रहीत की है। मैथिली लोक साहित्य के संरक्षण, संकलन एवं प्रकाषन के लिए अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिशद प्रयाग, बिहार राश्ट्र भाशा परिशद पटना, मिथिला रिसर्च इन्स्टीट्यूट दरभंगा, मैथिली अकादमी पटना आदि संस्थाएँ निरंतर कार्य कर रही हैं।

मगही लोक साहित्य :— यह गया, औरंगाबाद, हजारीबाग, मुँगेर और भागलपुर में मुख्य रूप से बाली जाती है। परन्तु गया इसका केन्द्र है। पं० राम नरेष त्रिपाठी ने १९४२ ई. में मगही के कुछ लोक गीतों का प्रकाषन किया। इसके बाद कुछ ग्रामीण कवियों में श्रीधर प्रसाद की 'गिरिजा गिरीष चरित' तथा 'उमाषंकर विवाह कीर्तन' पुस्तकें प्रकाषित हुई। डॉ० विष्वनाथ प्रसाद के निर्देषन में

बिहार राश्ट्रभाशा परिशद पटना के लोक भाशा अनुसंधान विभाग ने मगही के ११७६० लोक गीतों, २२ लोक गाथाओं, ९ लोक नाट्यों का संग्रह किया था। डॉ० विष्वनाथ प्रसाद ने लोक गीतों का संग्रह 'मगही संस्कार गीत' भी प्रकाषित किया है। श्री रामचन्द्र प्रसाद की 'मगही लोक गीत', कपिलदेव सिंह की 'मगही भाशा और साहित्य' तथा कृ श्णदेव प्रसाद की 'मगही भाशा और उसका साहित्य' पुस्तकों में मगही लोक साहित्य व इसका विवेचन देखने को मिलता है। डॉ० सम्पति अर्याणि ने मगही लोक साहित्य पर विस्तृत षोध प्रबंध लिखा है। श्री मुनीष्वर राय 'मुनीष' के सम्पादन में 'झांझ के झनक' नाम से लोक गीतों का संग्रह प्रकाषित हुआ है। डॉ० राम प्रसाद सिंह ने 'मगही अकादमी' की स्थापना, मगही पत्रिका का सम्पादन, प्रति वर्श 'मगही साहित्य सम्मेलन' का आयोजन करके मगही लोक साहित्य की आजीवन सेवा की। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की तथा लोक गीतों, नाटकों, लोक कथाओं का संकलन कर प्रकाषन किया। इन्होंने 'लोहा मरद्' नामक खण्डकाव्य की भी रचना की।

भोजपुरी लोक साहित्य :— यह भाशा उत्तरप्रदेष के वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, जौनपुर, आजमगढ़, बस्ती (कुछ भाग); बिहार के भोजपुर, रोहतास, सारन, सिवान, महाराजगंज, पूर्वी चम्पारन, पष्चिमी चम्पारन, राँची तथा भारत के बाहर मारिषस, फीजी, सूरिनाम, ब्रिटिष गाइना, उगाण्डा आदि में बोली जाती है। भोजपुरी लोक साहित्य का सर्वप्रथम षोधकर्त्ता डॉ० सर ग्रियर्सन है, जिन्होंने १८८४ ई. में इंग्लैण्ड की एक षोध पत्रिका में 'सम बिहारी फोक सांग्स' नामक लेख प्रकाषित किया था। इनका दूसरा लेख 'सम भोजपुरी फोक सांग्स' १८८६ ई. में प्रकाषित हुआ। इस लेख में ४९ लोक गीतों का संकलन प्राप्त होता है। इनका तीसरा लेख भोजपुरी की सुप्रसिद्ध लोकगाथा विजयमल से संबंधित है। यह भोजपुरी का लोक महाकाव्य है, जो ११३८ पंक्तियों में समाप्त होता है। ग्रियर्सन ने ही 'राजा गोपी चन्द' नामक गाथा का भी प्रकाषन किया है। लोक महाकाव्य आल्हा की लोकगाथा के 'आल्हा का विवाह' नामक गीतों को संग्रह करके ग्रियर्सन ने अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाषित कराया है। आल्हा के विवाह का गीत ५५८ पंक्तियों में समाप्त होता है। ग्रियर्सन ने ही जर्मनी की एक पत्रिका में 'नयकवा बनजारा' नामक भोजपुरी गाथा को प्रकाषित किया है। विलियम क्रुक ने 'नार्थ इण्डियन नोट्स एण्ड क्वेरीज' नामक एक षोध पत्रिका निकाली, जिसमें भोजपुरी लोक गीतों एवं कथाओं का प्रकाषन किया गया है। ह्यूज फ्रेजर ने गोरखपुर जिले से प्राप्त भोजपुरी लोक गीतों का संकलन किया। इन गीतों की कुल संख्या १३ हैं। डॉ० कृश्ण देव उपाध्याय ने 'भोजपुरी लोक गीत भाग — १' नाम से २७१ लोक गीतों का संग्रह प्रकाषित किया। डॉ० उपाध्याय ने ही 'भोजपुरी लोक गीत भाग — २' नाम से ४३० लोक गीतों का संकलन प्रकाषित किया। पुन: डॉ० उपाध्याय ने 'भोजपुरी लोक गीत भाग — ३' नामक ग्रंथ में ६०० गीतों का संकलन कर प्रकाषित किया। लगभग ६०० पृश्ठों की पुस्तक 'भोजपुरी लोक गीतों में करुण रस' में श्री दुर्गा षंकर प्रसाद सिंह ने १५ प्रकार के गीतों को समाहित किया है। इन्होंने 'भोजपुरी के कवि और काव्य' लिखकर फिरंगिया, बटोहिया और विदेसिया लोक गीतों को इसमें उद्धृत किया है। श्री डब्ल्यू. जी. आर्चर और श्री संकठा प्रसाद ने 'भोजपुरी ग्राम्य गीत' में आरा जिले के संस्कार गीतों को स्थान दिया है। श्री हंस कुमार तिवारी और श्री राधा बल्लभ षर्मा ने 'भोजपुरी संस्कार गीत' नामक पुस्तक संपादित करते हुए ३४१ संस्कार गीतों को इसमें समावेष किया है। डॉ० विजय नारायण सिंह ने 'विजय बलियाटिक' नामक संग्रह लिखकर विभिन्न संस्कारों के १२५ गीत इसमें समाहित किए हैं। श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी ने २५ लोक गीतों को संकलित करके 'भोजपुरी लोक गीत' का प्रणयन किया। इसी प्रकार विमल कुमार सिंह 'विमलेष' ने ६२ गीतों को संकलित करके 'गाँव के गीत' का प्रणयन किया। डॉ० हरिषंकर उपाध्याय ने बलिया जिले के लोक गीतों

को संकलित करके 'फोक सांग्स फ्राम बलिया डिस्ट्रिक्ट' पुस्तक लिखी। स्विटजरलैण्ड की डॉ० जितका हरतोग ने बलिया जिले के पचास लोक गीतों को अंग्रेजी में अनुवाद कर विवेचना प्रस्तुत करते हुए 'फिफ्टी फोक सांग्स फ्राम बलिया' नामक षोध प्रबंध तैयार किया।

लोकगाथा के क्षेत्र में डॉ० सत्यव्रत सिन्हा ने ९ लोक गाथाओं को समाहित करते हुए 'भोजपुरी लोक गाथा' पुस्तक का प्रणयन किया। डॉ० अर्जुन दास केसरी ने मिर्जापुर जिले के लोरिकायन के पाठ को संग्रहीत करके प्रसिद्ध भोजपुरी लोक गाथा 'लोरिकायन' लिखी। डॉ० ष्याम नारायण पाण्डेय ने उत्तरप्रदेष के विभिन्न क्षेत्रों से लोरकी गाथा के विभिन्न पाठों को संकलित करके वृहदाकार ग्रन्थ 'लोरकी' का संपादन किया है। डॉ० कृश्ण देव उपाध्याय के द्वारा भोजपुरी की प्रसिद्ध लोक गाथाओं— आल्हा, गोपीचन्द, भरथरी, विजयमल, भगवती देवी, वस्ती सिंह को षामिल करते हुए 'भोजपुरी लोक गाथा' का प्रणयन किया गया।

लोक कथा के क्षेत्र में डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ने 'बिहार की भोजपुरी लोक कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन' विशय पर विस्तश्त षोध ा कर भोजपुरी प्रदेष की लोक कथाओं का सम्यक विवेचना प्रस्तुत किया है। इनकी दूसरी पुस्तक 'भोजपुरी नीति कथा' में नीतिपरक कथाएँ संग्रहीत है। यह नीति संबंधी पहली पुस्तक है। पं० राजबली पाण्डेय ने ३२ व्रत कथाओं का संकलन किया है। इसमें वे कथाएँ समाहित हैं, जिसे भोजपुरी महिलाएँ त्यौहारों के अवसर पर प्राय: कहती हैं। डॉ० अर्जुन दास केसरी ने 'एगो रहन राजा' लिखकर मिर्जापुर की आदिवासी लोगों में प्रचलित १६ कथाओं को स्थान दिया है। श्रीमती राम दुलारी देवी ने 'एगो राजा रहले' लिखकर उसमें सारन (बिहार) जिले में प्रचलित १३ भोजपुरी लोक कथाओं का समावेष किया। श्रीमती सुषीला पाण्डेय ने 'वेलवन्ती रानी' लिखकर उसमें भोजपुरी की १२ ठेठ ग्रामीण लोक कथाओं को स्थान दिया है।

भोजपुरी लोक सुभाशितों (कहावत, पहेली, मुहावरा, सूक्ति) का सर्वप्रथम संग्रहकर्त्ता भाशा विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० उदय नारायण तिवारी हुए। अनंतर, डॉ० सत्य देव ओझा, डॉ० षषिषेखर तिवारी, डॉ० मुक्तेष्वर नाथ तिवारी 'बेसुध' (कृ ति— भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे), पं० सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (कृति— वाणी के बोल, भोजपुरी मुहावरा संग्रह), डॉ० श्रीधर मिश्र (कृति— भोजपुरी पहेलियों) आदि ने इस दिषा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

भोजपुरी साहित्य की सेवा में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना, भोजपुरी संस्थान पटना, भोजपुरी अकादमी पटना, भोजपुरी संसद वाराणसी, भोजपुरी साहित्य परिशद जमषेदपुर, भोजपुरी समिति कलकत्ता आदि संस्थाएँ सक्रिय हैं।

संदर्भ ग्रंथ :—

१. डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, भारत में लोक साहित्य।

२. सोमनाथ दर, काष्मीरी फोकटेल्स, हिन्द किताब्स लिमिटेड बम्बई।

३. मोहन कृष्ण दर, काष्मीर का लोक साहित्य, आत्माराम एण्ड सन्स।

४. डुग्गर का लोक साहित्य।

५. देवेन्द्र सत्यार्थी, गद्दी फोक सांग्स।

६. देवेन्द्र सत्यार्थी, फोक सांग्स आफ नार्थ इण्डिया।

७. मोहन सिंह, फोक सांग्स आफ पंजाब।

८. डॉ० रन्धावा, काँगरा फोक सांग्स।

९. हिन्दी साहित्य का वश्हत् इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा काषी।

१०. बैजनाथ सिंह विनोद, मैथिली लोक साहित्य, अजन्ता प्रेस पटना।

११. नन्दीपति दास, नैना भुटका, पुस्तक भण्डार पटना।

१२. डॉ० उमेष मिश्र, मैथिली और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाषन दिल्ली।

⌘⌘⌘